

---

# Shri Keshavaraja Ashtakam

श्रीकेशवराजाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Keshavaraja Ashtakam

File name : keshavarAjAShTakam.itx

Category : vishhnu, vAsudevAnanda-sarasvatI, aShTaka, krishna

Location : doc\_vishhnu

Author : vAsudevAnandasarasvatI TembesvAmi

Description-comments : From stotrAdisangraha

Latest update : May 12, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Keshavaraja Ashtakam

---

### श्रीकेशवराजाष्टकम्

---



कशब्दवाच्यो कथितो विधाता स्यादीशशब्देन उरो विकर्ता ।  
तौ द्वौ स्वशक्त्या वशत्यतन्द्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ १ ॥

यतुर्भुजैः सायुधभूषणैर्यैर्वो लोकापालैरिव युक्त्रभाट्यैः ।  
जयत्यजस्रं निजपा विन्द्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ २ ॥

पीताम्बरालङ्कृतचारुदण्डः डिरीटकेयूरधरो विमोहः ।  
भृत्यावने योऽनिशमस्ततन्द्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ ३ ॥

कल्पान्तमेघद्युतिगर्वहर्त्री यस्य द्युतिः स्वान्तरुर्षदात्री ।  
भिभाति लावण्यनिधिः सुधीर्यः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ ४ ॥

मडाविभूतिर्जगतीह दासी-भूतामरस्त्रीरपि यस्य दासी ।  
पदस्य नित्यं धृतडासमुद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ ५ ॥

यो नामदेवस्य दृष्टां सुभक्तिन्त ज्ञात्वाऽपि बालस्य मुदे छि दृग्धम् ।  
शिलात्मनापीह पपौ सुभद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ ६ ॥


यो देशिकस्यापि तरां सुभक्त्या तुष्टो मडात्मा तदधीन आस ।  
तद्दशज्येभ्योऽप्यधुना वितन्द्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ ७ ॥

प्रसीद मे केशव दीनबन्धो प्रसीद मे केशव यार्तबन्धो ।  
बन्धोच्छिद्यार्थोऽसि कृपासमुद्रः स केशवोऽत्र प्रथितोऽस्त्युपेन्द्रः ॥ ८ ॥


अेवं स्तुतोऽष्टभिर्द्वैः पदैः पातु न आर्तिहा ।  
मडात्मा वासुदेवेन यतिनाऽस्तु भवार्तिहा ॥ ९ ॥

इति श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं केशवराजाष्टकं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Shri Keshavaraja Ashtakam*

pdf was typeset on November 22, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

